

Class-XII

Hindi Elective(002)

खण्ड - 'क'

कायलियी हिंदी और रचनात्मक लेखन

Question - 3

Answer - क (a)

किसी भी कहानी में संवाद महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। संवाद कहानी का एक प्रमुख तत्व है जो कहानी की गति प्रदान करता है उसे व्यावसायिकता बनाता है। संवाद के ज़रिए कहानी की आगे बढ़ते हैं। संवाद के ज़रिए हमें कहानी का उद्देश्य, उसके पात्रों का चरित्र-चित्रण, भाषा-शैली, परिवेश का बोध होता है। पात्रों के द्वारा की जाने वाली पात्रों के संवाद लिख विचारों की अभिव्यक्ति, धारणाक्रम ही संवाद है। पात्रों के संवाद लिखते समय कहानीकार को निम्न बातें ध्यान

रखना चाहिए -

- (i) पात्रों का संवाद उनके चरित्र, स्वभाव के अनुकूल होना चाहिए।
- (ii) संवाद की भाषा सरल, सहज ^{स्पष्ट} तथा स्वाभाविक होनी चाहिए।

- (iii) संवाद शीघ्र होना चाहिए। इसमें नीखलता, अवाउपन पाठक या श्रोता वर्ग को कहानी के प्रति दिलचस्पी लाने से होता है।
- (iv) पात्रों का चरित्र-चित्रण भी कहानीकार संवाद के जरिए करवाते हैं जो कहानी को आकर्षक बनाता है।

Answer (20) (a)

कहानी के कथानक में 'दृष्ट' एक महत्वपूर्ण एवं शैक्षिक अंग होता है जिसके बिना कहानी अधूरी एवं अवाउपन लगने लगती है। वास्तव में, दृष्ट दो अलग-अलग व्यक्तियों की अलग-अलग विचारधारा, भिन्न-भिन्न क्रियाकलापों की प्रस्तुत करता है। यदि दो व्यक्ति एक ही विचारधारा रखते हैं तो कहानी को आगे नहीं बढ़ाया जा सकता क्योंकि व्यक्तियों की किसी विषय पर राय समान है। परंतु परस्पर विपरीत राय रखने वाले व्यक्ति आपस में तर्क-वितर्क, पक्ष-विपक्ष, विरोध करके कहानी को शीघ्र, ठ सवं गति प्रदान करते हैं।

4

Question - 4Answer - (क) (व)

समाचार - पत्रों या लेखन के विभिन्न माध्यमों के जरिए पाठकों द्वारा अपने पाठकों तक किसी विषय की जानकारी देना, उन्हें शिक्षित करना, उनका मनोरंजन करना पत्रकारीय लेखन कहलाता है।

पत्रकारीय लेखन, साहित्यिक एवं सृजनात्मक लेखन से भिन्न होता है। यहाँ पत्रकारों को लेखन करते समय अनुशासित होकर सही एवं सटीक जानकारी पाठकों को देनी होती है। जबकि सृजनात्मक लेखन में कल्पनाओं के अनुसार, लेखन किया जा सकता है। पत्रकारीय लेखन में तथ्यों एवं विषय की स्पष्ट एवं संपूर्ण जानकारी प्राक्क तक पहुँचाना होता है। लेखन करते समय एक ही निश्चय ढाँचा में ही समाचार देना होता है जबकि सृजनात्मक लेखन में लेखक को खुली हूट होती है।

Answer - (ख.) (b)

विशेष लेखन के अंतर्गत अनेक क्षेत्र आते हैं जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, आर्थिक, सिनेमा, राजनीति, देश-विदेश विदेश, रक्षा, खेल-जगत इत्यादि।

खेल-जगत के विषय में लेखन करते समय संवाददाता को उस विषय की पूर्ण-जानकारी एवं ख़ास बेनी चाहिए। खेल में प्रयुक्त शब्दावली से संवाददाता भली-भाँति परिचित होना चाहिए जैसे - कैच आउट, नॉ बॉल इत्यादि। इस क्षेत्र में विशेषता हासिल करने के लिए खेल-जगत में ख़ास होना चाहिए। (1) अच्छे एवं भूतपूर्व खिलाड़ियों द्वारा बनाए गए रिकॉर्ड याद होना चाहिए। (2) साक्षात्कार के माध्यम से ज्ञानवर्धन किया जाता है। खेल से जुड़े व्यक्तियों के संपर्क में रहने खेल से संबंधित पत्रिकाएँ आदि पढ़कर विशेषज्ञता हासिल की जा सकती है। राजनीति जगत में विशेषज्ञता हासिल करने के लिए राजनैतिक व्यक्तियों, उनकी पार्टी, दल आदि का संपूर्ण ज्ञान साक्षात्कार के द्वारा लिया जाता है। (3) संवाददाता के राजनीति क्षेत्र से जुड़े अनेक स्रोत होना चाहिए जो उन्हें आंतरिक बातों की सही जानकारी दे। (4) अध्ययन करते समय (स्नातक) में हमें राजनीति के विषय चुनने चाहिए।

खण्ड - (ख)

पाठ्य - पुस्तक एवं पूरक पाठ्य - पुस्तक

Question-5

Answer - (क)

भाव सौंदर्य - प्रस्तुत पंक्तियों में श्री राम का सीता जी एवं लक्ष्मण के साथ वनवास पर जाने के बाद उनकी माता कौशल्या की मनोदशा का मार्मिक वर्णन किया गया है। कौशल्या माता राम की अतीत की स्मृतियों में खी जाती है, किंतु जैसे ही उन्हें वास्तविकता का अहसास होता है कि राम तो वनवास पर चले गए हैं वे एक पित्र के समान स्थिर हो जाती हैं वे स्थिर होकर चित्रलिखित वसी रह जाती हैं उनके मन में राम के प्रति अत्यंत प्रेम एवं उनसे उनके वियोग में रहने का चित्रण किया गया है। लुलसीदास जी कहते हैं कि उस समय तो पीर सीखी हुई सी जान पड़ती है अर्थात् प्रेम का असली वर्णन तो किया ही नहीं जा सकता क्योंकि उस अवस्था का वर्णन करने हुए ही विरहावस्था में धाग ही निकल आए।

शिल्प सौंदर्य - ① माता कौशल्या का राम के वनवास जानि पर उनकी विरह-वेदना का मार्मिक चित्र किया गया है।

- ② भाषा अच्छी है।
- ③ कथन एवं रस की अनुभूति है।
- ④ भाषा सहज एवं सुगम्य है।
- ⑤ उपमा एवं उत्प्रेक्षा अलंकार का सुंदर चित्रण।

Questions. Answers (ख).

प्रस्तुत पंक्ति पंक्तियों में रानी नागमती का अपने प्रियतम राजा रत्नसेन के वियोग का सुंदर एवं मार्मिक चित्रण है। रानी नागमती की वियोग की स्थिति बहुत कष्टमय है। वे कौवीं और भौंरी को संबोधित करते हुए कहती हैं कि हे कौवीं, भौंरी तुम मेरा मेरा यह संदेश मेरे प्रियतम (राजा रत्नसेन) को जाकर कह दो कि उनके वियोग में उनकी नायिका (रानी नागमती) विरह की आग में जलकर मर गई है और उसी की राख के कारण, धुँआँ के कारण हमारा रंग, शरीर काला पड़ गया है। यह नायिका की विरह-पीड़ा को प्रदर्शित करता है।

Question-6

विष्वापति की विरहणी नायिका 'बाधा जी' अपने प्रियतम 'श्री कृष्ण' के वियोग में विरह स्वपी अग्नि में जल रही हैं। उनके प्रियतम गोकुल छोड़कर मथुरा चले गए जिससे नायिका की उनका आनन्दपूर्ण शांत नहीं हो पा रहा है। नायिका की आंखों से निरंतर अश्रुधारा बहती जा रही है। उनकी विरह पीड़ा बढ़ रही है, वे विरह की अग्नि में दुर्बल होती जा रही हैं। अब उनका शरीर क्षीण हो रहा है वे केवल अपने प्रियतम के पुम के क्षणों को याद कर उस पुम स्वरूप का पान करना चाहती हैं। वे अपनी सखियों को पुम के पलों में लेने वाले सुख का वर्णन करती हैं। वे हृदय शांतिक दृश्य जो वियोग अवस्था लेने पर परम सुख देते हैं वियोग की स्थिति में उन्हें वह दृश्य, जीयल की कूक, मोरों का गुंजन कण्ठकारी लग रहा है।

Question-7Answer- (क)

शेर लघुकथा में 'शेर' को खतापारी का प्रतीक बताया गया है।

श्रीर, व इस सत्ता को प्रतीक है जो जानवरों को (आम जनता) अमैंक झूठे वादे करके, नए-नए सपने दिखाकर अपने जाल में कैसा लेती है। लेखक ने इस कहानी के माध्यम से आज के समय के सत्ताधारियों, सह-अस्तित्ववादियों, पुँजीपूति वर्ग, सरकार के होंग पर प्रहार किया है। जब तक जनता इनका विरोध न करे तब तक वे लोक कल्याण का होंग करते हैं परंतु जैसे ही कोई अपने न्याय की मांग कर उन्हें सच्चाई दिखाता है, उसका असली खूंखार स्वयं सामने आ जाता है और वे लोगों का दमन करने लगते हैं। लोगों के जीवन को स्वर्ग बनाने का झांसा देकर वे केवल अपना जीवन सुखी बनाते हैं। यह कहानी शासन व्यवस्था पर एक करारी चीट है।

Answer - (ख)

प्रकृति भी, लोगों के विस्थापन होने पर उनकी जमीनों को छीनने पर दुख प्रकट करती है इसका जीवंत उदाहरण सिंगरौली गांव में देखा जा सकता था। जैसे ही यह खबर आई की अमरौली प्रोजेक्ट के लिए कई गांव उखाड़ दिए जाएंगे, अमरौली गांव भी सूख गया। जिन वृक्षों से आम आते हैं, सदा हरे-भरे रहते थे अब उनपर सूनापन छा गया है।

प्रकृति का मनुष्य के बिना और मनुष्य का प्रकृति के बिना अस्तित्व नहीं है दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं।

सिंगरौली से लोगों के विस्थापन का कारण औद्योगिकरण था। सिंगरौली खनिज संसाधनों, अजगढ़ झील, वन्य-जीवों, वृक्षों से धरा-भरा होगा या जिसे बैलुंग कहा जाता था। यही अपार संपदा उसके लिए विनाश का कारण बनी।

Question - 8

'पहचान' लघुकथा के आधार पर राजा को अंघी, बहरी, और गुंभी प्रजा पसंद आती है जो न देख सके, न बोल और न ही सुन सके। तात्पर्य यह है कि राजा केवल अपना विकास चाहता है वह अपनी अपने विपक्ष में सब नहीं चाहता जो निरंकुश शासन व्यवस्था है।

राजा को ऐसी प्रजा इसलिए पसंद आती है क्योंकि वह बैरीकटोठ अपने मनमानी ढंग से शासन करे और प्रजा को शोषण कर केवल अपने हित की और अग्रसर हो यह लोकतांत्रिक व्यवस्था का प्रतिफल नहीं है। इससे केवल राजा अपना जीवन सुखमय और धनार्थ बनाता है। वह राज्य के विकास पर ध्यान न देकर

केवल अपने विकास की आगि बढ़ाता है। यह निरंकुशता, लालचीपन का चित्रण करती है।

Question- 9

Answer - (क)

मालवा, धरती गहन गंभीर, उग-उगा, खेती पग-पग नीर का आशय यह है कि मालवा प्रदेश की धरती, मृदा, वहाँ की संस्कृति, वनस्पति, संसाधन सब आदर्श हैं। मालवा के लोगोंने प्रकृति के साथ जो संकुलन स्थापित किया था वह प्रशंसनीय था वे अपनी प्राकृतिक संपत्ति का दोहन न कर उसे संरक्षित करते थे जिसके कारण कभी संकट का सामना नहीं करना पड़ता था। वहाँ जगह-जगह पानी की वृक्षमय माँ में उपलब्ध था। खाद्य संसाधनों की कमी नहीं है यहाँ धरती गहन थी। हर तरफ झील, तालाब, नदियाँ, हरे-भरे खेत, लहलहाती फसलें वनस्पतियाँ और प्राकृतिक दृश्य हैं।

Answer - (ग)

'अपना मालवा खाऊ - उपाड़ू सम्पत्ता' चाहे में जब लैखण राजस्थान से मालवा के प्रदेश की सीमा में प्रवेश करता है तो शक्ति का सौंदर्य का मनोरम दृश्य देख देखकर आनंदित हो जाता है। उगते सूरज की निचरी छूप राजस्थान में रह जाती है अर्थात् मालवा में सूरज की रोशनी आना कम हो जाती है। चारों ओर एक अंधेरा-सा होया था, आसमान काले बादलों से घिरा था। अर्थात् यहाँ वर्षा ऋतु का मौसम था जो मालवा अभी गया नहीं था। लैखण मालवा की प्रत्येक वस्तु से परिचित था। वहाँ की मृदा, ताल-तलैया, खेतों में लहलहा रही फसलें, सुगंधित हवा, फूलों की खुशबू, सब उसका मन रसन्ना हो गया।

खण्ड - (क)Question-2 (b)

अशोक कुमार

वैलफेयर एसोसिएशन अध्यक्ष

नई दिल्ली

३ मई 2022

सेवा में

सचिव

नगर विकास प्राधिकरण

नई दिल्ली

विषय : सोसायटी के पास स्थित पार्क के सौन्दर्यीकरण हेतु।

महोदय

सविनय निवेदन है कि मैं जागृति वैलफेयर एसोसिएशन का अध्यक्ष आपका ध्यान मेरे सोसायटी के पास स्थित पार्क के सौन्दर्यीकरण हेतु आकृष्ट करवाना चाहता हूँ। यह पार्क विगत ३ वर्षों से निर्मित किया जा चुका है परंतु वहाँ का वातावरण स्वच्छ न होने सौन्दर्यीकरण न होने से उसका उपयोग नहीं किया जा रहा है। वहाँ

14

जो वृक्ष, पेड़-पौधे लगाए गए थे वे ध्यान न दे पाने के कारण सूख गए हैं। वहां बच्चों के झूले आदि की भी कमी है जिस वजह से बच्चे पार्क का आनंद नहीं उठा पाते हैं। पार्क के सामने झड़्डे के ढेर लगे रहते हैं, पार्क में गंदगी देखने की मिलती है, जो देखने में सुखमय नहीं लगता। यदि पार्क में निर्धारित साफ-सफाई, वृक्षारोपण, नए झूले आदि लगा दिए जाए तो उसका सही उपयोग किया जाने लगेगा।

आपसे बि सविनय निवेदन है कि कृपया इस विषय पर ध्यान देते हुए कोई उपाय एवं कदम उठाए जाएं। आपकी अति कृपा होगी।

भवदीय

अक्षय कुमार

Question - 1. (क)

बिना पानी सब सूखे
प्राचीन समय से एक कथावत सुनी आ रही है - 'बिना पानी सब सूखे'
हमारे पूर्वज अपनी आँखों वाली पीढ़ी को यह कथावत एवं इसका
महत्व बताते आए हैं। परंतु उन्हें केवल कथावत सुनने का नहीं,
इसे समझने का भी है। वास्तव में, बिना पानी सब सूखे। जल
मानव-जीवन का एक अभिन्न अंग है जिसके बिना मानव-जीवन,
प्रकृति की कल्पना नहीं की जा सकती। जल हमारे दैनिक
जीवन का हिस्सा है जिसके बिना जीवित नहीं रहा जा
सकता। आज के युग में जल का महत्व जानना अत्यंत आवश्यक है।
जल हमारी दैनिक जीवन के क्रियाकलापों में उपयोग
होता है। हमारे घरेलू का अधिकतर भाग जल से घिरा है परंतु उपयोग
में लाए जाने वाले जल की मात्रा घट रही है। हम पानी पीते हैं
जिससे हम जीवित रह पाते हैं। जल का उपयोग विद्युत बनाने में,
भोजन पकाने में, नहाने में, पैर-चोंचों को देने में किया जाता है।
इसलिए इसका उपयोग बहुत अत्यधिक मात्रा में होता है। अगर जल न
हो तो ये सभी क्रियाविविधियाँ पर विराम लग जाए।

आज के युग में जल संकट का खतरा पैदा होता जा
रहा है जिसका मुख्य कारण उसका असुव्यवस्थित ढंग से उपयोग

न करना है। जल का अंधाधुंध अनावश्यक उपयोग जल की कमी की जन्म दे रहा है। मानव अपनी आवश्यकता से अधिक लालची तरीके से इसको बर्बाद कर रहा है। परंतु क्या हमने भविष्य में बिना जीवन की कल्पना की है। आज उकृति की जो नुकसान मानव पहुंचा रहा है जिससे वर्षा का असमय होना, सूखा होना, अकाल पड़ने जैसी गंभीर आपदाओं का सामना हमें करना ही पड़ेगा। बिना पानी के पनस्पति नष्ट हो जाएगी, खेतों में फसलें नहीं होगी, मनुष्य की मृत्यु व्याप्त हो लगेगी क्योंकि जल ही जीवन है। इस बात को मनुष्य जितना जल्दी समझेगा उसका उतना ही भला होगा। हमें संकल्प करने की आवश्यकता है हम जल को संरक्षित करें उसका अति अनावश्यक उपयोग करना बंद कर दें यही अच्छे नागरिक होने की पहचान कराला है एवं भावी पीढ़ी को जल के संकट का सामना न करने पड़े हमें इसलिए हमें वर्तमान पीढ़ी को इस जिम्मेदारी, संकल्प का निर्वहन करना है।